## सप्तमः पाठः

# डॉ॰ राजेन्द्रप्रसादः

[इस पाठ में भारतीय गणतन्त्र के प्रथम राष्ट्रपति डॉ॰ राजेन्द्र प्रसाद का संक्षिप्त परिचय है। वे बिहार राज्य के ही थे। उनका छात्र-जीवन अत्यन्त गौरवपूर्ण था। सभी परीक्षाओं में प्रथम स्थान पाने वाले डॉ॰ राजेन्द्र प्रसाद ने बिहार, बंगाल, असम तथा बर्मा इन समस्त प्रदेशों के छात्रों में मैट्रिक परीक्षा में प्रथम स्थान पाया था। यह गौरव अत्यन्त विरल था। कलकत्ता विश्वविद्यालय से एम.ए. और एम.एल. – दोनों ही परीक्षाओं में सर्वोच्च स्थान पाने के बाद भी अपनी सरलता के लिए नेताओं के बीच ये प्रतिष्ठित थे। समाज सेवा, भारतीय संस्कृति से प्रेम, सादगी भरा जीवन तथा सभी कार्यों में ईमानदारी राजेन्द्र बाबू की विशेषताएँ थीं। राष्ट्रपति भवन में भी इनके सरल जीवन को पीढ़ियों तक याद किया जाता है।]

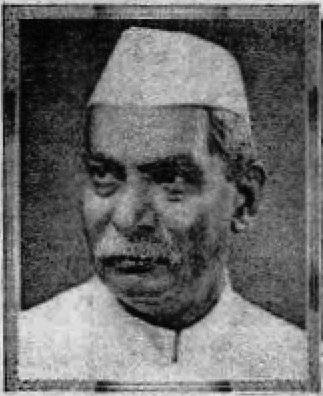

स्वतन्त्रभारतस्य प्रथमो राष्ट्रपतिः भारतरत्न राजेन्द्रप्रसादः। तस्य जन्म 1884 तमे ख्रीष्टाब्दे दिसम्बरमासस्य तृतीयदिनांके बिहारप्रान्तस्य सारणमण्डले (सम्प्रति सिवानमण्डले) 'जीरादेई' इति ग्रामे अभवत्। स बाल्यादेव परममेधावी आसीत्। बालावस्थायां स छपरानगरे अधीतवान्। तदनन्तरं पटनानगरस्य टी. के. घोष–अकादमीतः प्रवेशिका

(मैट्रिकुलेशन)-परीक्षायां सम्मिलितः । कलकत्ताविश्वविद्यालयस्य सर्वेषु प्रवेशिकाछात्रेषु सर्वोत्तमं स्थानं प्राप्तवान् । ततः कलकत्तानगरं गत्वा कालेजशिक्षां विधिशास्त्रशिक्षां प्राप्य, सर्वासु परीक्षासु मूर्धन्यं पदं लब्धवान् । ततः अध्यापनकार्ये संलग्नः । पश्चात् अधिवक्तृवृत्तिं गृहीतवान् ।

राजेन्द्रप्रसादः महान् बुद्धिमान् व्यावहारिकः च आसीत् । तस्य मनः अधिवक्तृवृत्तौ संलग्नं नासीत् । बालावस्थायामेव तस्मै स्वदेशभक्तिः रोचते स्म । स सदैव राष्ट्रियभावनया अभिभूतः आसीत् । महात्मनो गान्धिनः मार्गम् आश्रित्य स्वतन्त्रतासमरे योगदानं कृतवान् । 1917 तमे खीष्टाब्दे 'चम्पारण-आन्दोलने' महात्मनो गान्धिनः सम्पर्के समायातः । ततः सर्वं कार्यं विहाय देशसेवायां संलग्नः ।

1934 तमे वर्षे बिहारप्रान्ते भयावहो भूकम्पः अजायत । मार्गाः भग्नाः, भवनानि विशीर्णानि, क्षेत्राणि विनष्टानि, जले स्थलं स्थले च जलं जातम् । अवरुद्धो यातायातः । प्रसृताः रोगाः, सर्वत्र हाहाकारः सञ्जातः । तदा राजेन्द्रप्रसादः स्वकीयैः सहचरैः सह जनानां प्रभूतां सहायतां कृतवान् । नगराद् नगरम्, ग्रामाद् ग्रामं गतवान् यथाशक्ति स सहायताकार्यं सम्पादितवान् । कासरोगेण ग्रस्तोऽपि राजेन्द्रप्रसादः शरीरचिन्तामुपेक्ष्य परोपकारे संलग्नः ।

स्वतन्त्रतान्दोलने सर्वदा अयम् अग्रणीः । बहूनि वर्षाणि कारागारेऽपि व्यतीतवान् । स्वतन्त्रे भारते विधाननिर्माणस्य कार्यं प्रथमम् आसीत् । 1946 तमे खीष्टाब्दे एकादशदिनाङ्के दिसम्बरमासे भारतीयसंविधान-सभायाः प्रथमः कार्यकारी अध्यक्षः अभवत् । किञ्च 1950 तमे खीष्टाब्दे स भारतीयगणतन्त्रस्य प्रथमः राष्ट्रपतिः स्वीकृतः अभूत् । तदनन्तरं राष्ट्रपतिपदस्य कृते द्वयोः निर्वाचनयोः स एव विजयं प्राप्तवान् ।

राजेन्द्रप्रसादाय बहव: विश्वविद्यालया: डॉक्टर इत्यादीन् उपाधीन् दत्तवन्त: । स: बहूनि पुस्तकानि अलिखत् । संस्कृतभाषाया: महत्त्वविषयेऽपि स पुस्तकं लिखितवान् । तस्य भारतीयसंस्कृतौ महती श्रद्धा आसीत् । तस्य सर्वेषु धर्मेषु सहानुभूतिरपि आसीत् । स आडम्बररहित: सरलस्वभाव: नि:स्वार्थदेशसेवी इति सर्वत्र प्रसिद्ध: । 1963 तमे खीष्टाब्दे फरवरीमासस्य अन्तिमतिथौ स स्वपार्थिवं शरीरं त्यक्तवान् । बिहारराज्यस्य सम्पूर्णस्य देशस्य च गौरवरूप: राजेन्द्रप्रसाद: सदा स्मरणीय: ।

## शब्दार्था:

| | | |
|---|---|---|
| खीष्टाब्दे | = | ईस्वी सन् में |
| सम्प्रति | = | इस समय, वर्तमान में |
| अभवत् | = | हुआ |
| आसीत् | = | था |
| परममेधावी | = | अत्यधिक प्रतिभा सम्पन्न |
| बालावस्थायाम् | = | बाल अवस्था में |
| अधीतवान् | = | अध्ययन किया, पढ़ा |
| तदनन्तरम् | = | उसके बाद |
| अकादमीत: | = | अंकादमी से (वैसा संस्थान जहाँ कई विशेषज्ञ या विद्वान् अध्यापन करते हैं, अकादमी कहलाता है ।) |
| परीक्षायाम् | = | परीक्षा में |

| | | |
|---|---|---|
| सम्मिलितः | = | शामिल हुए |
| सर्वेषु | = | सब में, सभी में |
| प्रवेशिकाछात्रेषु | = | प्रवेशिका (मैट्रिक/माध्यमिक) के छात्रों में |
| प्राप्तवान् | = | प्राप्त किया |
| ततः | = | उसके बाद |
| गत्वा | = | जाकर |
| विधिशास्त्रशिक्षाम् | = | कानून की शिक्षा को |
| प्राप्य | = | प्राप्त करके |
| सर्वासु परीक्षासु | = | सभी परीक्षाओं में |
| मूर्धन्यं पदम् | = | शीर्षस्थ स्थान को, श्रेष्ठ स्थान को |
| लब्धवान् | = | पाया |
| अध्यापनकार्ये | = | अध्यापन कार्य में |
| संलग्नः | = | जुड़ गए, शामिल हुए |
| पश्चात् | = | बाद में, पीछे |
| अधिवक्तृवृत्तिम् | = | अधिवक्ता (lawyer) के कार्य को |
| गृहीतवान् | = | ग्रहण किया, अपनाया |

| | | |
|---|---|---|
| महान् | = | बड़ा (great) |
| व्यावहारिक: | = | समुचित आचरण करने वाला |
| अधिवक्तृवृत्तौ | = | अधिवक्ता (वकील) के कार्य (व्यवसाय, पेशा) में |
| तस्मै | = | उसके लिए |
| स्वदेशभक्ति: | = | अपने राष्ट्र के प्रति भक्ति, प्रेम, लगाव |
| रोचते स्म | = | अच्छा लगता था |
| सदैव | = | हमेशा, सर्वदा, हर समय |
| राष्ट्रियभावनया | = | राष्ट्रीय भावना से |
| अभिभूत: | = | ओत-प्रोत, अत्यधिक प्रभावित |
| मार्गम् आश्रित्य | = | मार्ग का अनुसरण करके |
| स्वतन्त्रतासमरे | = | स्वतन्त्रता संग्राम में, आजादी की लड़ाई में |
| योगदानम् | = | भागीदारी, सहयोग |
| कृतवान् | = | किया |
| समायात: | = | आये |
| विहाय | = | छोड़कर, त्यागकर |
| भयावह: | = | भयानक |

| | | |
|---|---|---|
| अजायत | = | उत्पन्न हुआ, आया |
| भग्ना: | = | टूट गये |
| क्षेत्राणि | = | खेत |
| विशीर्णानि | = | छिन्न-भिन्न हो गये, बिखर गये, टूट गये |
| विनष्टानि | = | नष्ट हो गये |
| जातम् | = | हो गया |
| अवरुद्धः | = | बन्द हो गया |
| प्रसृताः | = | फैल गये |
| हाहाकार: | = | शोक, विलाप, रोना-धोना (शोक की प्रबलता) |
| सञ्जात: | = | फैल गया, हो गया |
| स्वकीयै: | = | अपने |
| सहचरैः | = | सहयोगियों, सहकर्मियों के साथ |
| जनानाम् | = | लोगों का |
| प्रभूताम् | = | प्रचुर, विपुल, अनेक |
| कृतवान् | = | किया |

| | | |
|---|---|---|
| नगराद्-नगरम् | = | नगर से नगर में |
| ग्रामाद्-ग्रामम् | = | गाँव से गाँव में |
| यथाशक्ति | = | शक्ति, क्षमता के अनुसार |
| सम्पादितवान् | = | पूरा किया |
| कासरोगेण | = | अस्थमा (दमा) रोग से |
| ग्रस्तोऽपि (ग्रस्तः + अपि) | = | ग्रसित होने पर भी |
| शरीरचिन्तामुपेक्ष्य (शरीरचिन्ताम्+उपेक्ष्य) | = | शरीर की (स्वास्थ्य की) चिन्ता की अनदेखी करके |
| अग्रणीः | = | आगे चलने वाले, मार्गदर्शक |
| कारागारेऽपि | = | जेल में भी |
| विधिनिर्माणस्य | = | कानून बनाने का |
| प्रथमम् | = | पहला (first) |
| भारतीयसंविधानसभायाः | = | भारतीय संविधान सभा के |
| स्वीकृतः | = | स्वीकृत |
| द्वयोः | = | दोनों में |
| अभूत् | = | हुए |

| | | |
|---|---|---|
| राष्ट्रपतिपदस्य कृते | = | राष्ट्रपति पद के लिए |
| निर्वाचनयोः | = | निर्वाचनों में |
| बहवः | = | अनेक |
| इत्यादीन् उपाधीन् | = | इत्यादि उपाधियों को |
| दत्तवन्तः | = | दिए |
| अलिखत् | = | लिखा |
| लिखितवान् | = | लिखा |
| तस्य | = | उसका |
| भारतीयसंस्कृतौ | = | भारतीय संस्कृति में |
| महती | = | बड़ी, बहुत |
| श्रद्धा | = | विश्वास के साथ सम्मान का भाव |
| सर्वेषु | = | सब, सभी में |
| धर्मेषु | = | धर्मों में |
| सहानुभूतिः | = | उदारता का भाव |
| आडम्बररहितः | = | बाह्य ताम-झाम, दिखावा से अलग |
| स्वपार्थिवम् | = | अपने नश्वर (शरीर) को |
| त्यक्तवान् | = | छोड़ दिया |
| स्मरणीयः | = | याद रखने योग्य |

# व्याकरणम्

**सन्धिविच्छेदः पदविच्छेदः वा -**

| | | |
|---|---|---|
| बाल्यादेव | = | बाल्यात् + एव (व्यञ्जनसन्धिः) |
| ग्रस्तोऽपि | = | ग्रस्तः + अपि (विसर्गसन्धिः, पूर्वरूपसन्धिः) |
| शरीरचिन्तामुपेक्ष्य | = | शरीरचिन्ताम् + उपेक्ष्य |
| कारागारेऽपि | = | कारागारे+अपि (पूर्वरूपसन्धिः) |
| इत्यादीन् | = | इति+आदीन् (यण्सन्धिः) |
| महत्त्वविषयेऽपि | = | महत्त्वविषये + अपि (पूर्वरूपसन्धिः) |
| सहानुभूतिरपि | = | सहानुभूतिः + अपि (विसर्गसन्धिः) |

**प्रकृति-प्रत्यय-विभागः**

| | | |
|---|---|---|
| अभवत् | = | √भू (धातु), लङ्लकारः, प्रथमपुरुषः, एकवचनम् |
| आसीत् | = | √अस् , लङ्लकारः, प्रथमपुरुषः, एकवचनम् |
| प्राप्तवान् | = | प्र+ √आप् +क्तवतु, पुं० |
| गत्वा | = | √गम् +क्त्वा |
| संलग्नः | = | सम् + √लस्ज् + क्त, पुं० |
| व्यावहारिकः | = | वि + अव + √हृ + घञ् = व्यवहारः; व्यवहार + ठक् = व्यावहारिकः |

| | | |
|---|---|---|
| रोचते | = | √रुच्, आत्मनेपदी, लट्लकारः, प्रथमपुरुषः, एकवचनम् |
| अभिभूतः | = | अभि + √भू + क्त |
| आश्रित्य | = | आ + √श्रि + ल्यप् |
| कृतवान् | = | √कृ + क्तवतु, पुं॰ |
| समायातः | = | सम् + आ + √या + क्त |
| अजायत | = | √जन् + लङ्लकारः, प्रथमपुरुषः, एकवचनम् |
| भग्नाः | = | √भञ्ज् + क्त, पुं॰, बहुवचनम् |
| विशीर्णानि | = | वि + √शॄ + क्त, नपुं॰, बहुवचनम् |
| विनष्टानि | = | वि + √नश् + क्त, नपुं॰, बहुवचन |
| जातम् | = | √जन् + क्त, नपुं॰, एकवचनम् |
| अवरुद्धः | = | अव + √रुध् + क्त, नपुं॰, एकवचनम् |
| सञ्जातः | = | सम् + √जन् + क्त, पुं॰, एकवचनम् |
| कृतवान् | = | √कृ + क्तवतु, पुं॰, एकवचनम् |
| गतवान् | = | √गम् + क्तवतु, पुं॰, एकवचनम् |
| सम्पादितवान् | = | सम् + √पद् + णिच् + क्तवतु, पुं॰, एकवचनम् |
| ग्रस्तः | = | √ग्रस् + क्त, पुं॰, एकवचनम् |

उपेक्ष्य = उप + √ईक्ष् + ल्यप्

व्यतीतवान् = वि + अति + √इ + क्तवतु, पुं०

स्वीकृतः = स्व + च्वि + √कृ + क्त, पुं०, एकवचनम्

अभूत् = √भू + लुङ्लकारः, प्रथमपुरुषः, एकवचनम्

दत्तवन्तः = √दा + क्तवतु, पुं०, बहुवचनम्

अलिखत् = √लिख् , लङ्लकारः, प्रथमपुरुषः, एकवचनम्

लिखितवान् = √लिख् + क्तवतु, पुं०

वर्धितम् = √वृध् + णिच् + क्त, नपुं., एकवचनम्

विराजते = वि+√राज् , आत्मनेपदी, लट्लकारः, प्रथमपुरुषः, एकवचनम्

## अभ्यासः

1. **एकपदेन उत्तरं वदत -**

(क) भारतस्य प्रथमः राष्ट्रपतिः कः ?

(ख) सारणमण्डलः कुत्र अस्ति ?

(ग) सः कुतः प्रवेशिकापरीक्षाम् उत्तीर्णः ?

(घ) चम्पारण-आन्दोलनस्य नेतृत्वं कः कृतवान् ?

(ङ) भारतीयसंविधानसभायाः प्रथमः कार्यकारी-अध्यक्षः कः अभवत् ?

2. सन्धिविच्छेदं कुरुत -

(क) प्रस्तोऽपि

(ख) तदनन्तरम्

(ग) सर्वोत्तमम्

(घ) बाल्यादेव

(ङ) सदैव

3. प्रकृति-प्रत्यय-विभागं कुरुत -

गत्वा, प्राप्य, गृहीतवान्, कृतवान्, स्मरणीयः, त्यक्तवान्

4. अधोलिखितानां पदानां विभक्तिं वदत -

ग्रामे, सर्वेषु, तस्मै, स्वतन्त्रे, तस्य, देशस्य, धर्मेषु, बहूनि, सहचरैः, परीक्षासु ।

## लिखितः

1. एकपदेन उत्तरम् लिखत ।

(क) डॉ. राजेन्द्रप्रसादस्य जन्म कदा अभवत् ?

(ख) बालावस्थायां सः कुत्र अधीतवान् ?

(ग) कस्यां परीक्षायां सर्वोत्तमं स्थानं प्राप्तवान् ?

(घ) चम्पारण-आन्दोलनं कदा अभवत् ?

(ङ) डॉ. राजेन्द्रप्रसादः कस्याः सभायाः अध्यक्षः अभवत् ?

(च) कस्मिन् वर्षे डॉ. राजेन्द्रप्रसादः भारतस्य प्रथमः राष्ट्रपतिः जातः ?

2. पाठानुसारं सुमेलनं कुरुत -

| 'क' | 'ख' |
|---|---|
| (क) भयावहो भूकम्पः | (i) मार्गाः |
| (ख) भग्नाः | (ii) यातायातः |
| (ग) अवरुद्धः | (iii) 1934 तमे खीष्टाब्दे |
| (घ) रोगाः | (iv) क्षेत्राणि |
| (ङ) विनष्टानि | (v) प्रसृताः |

3. पाठानुसारं कोष्ठकात् शब्दं चित्वा रिक्तस्थानानि पूरयत -

(क) सः बाल्यादेव ..................आसीत् । (मूर्खः/परममेधावी)

(ख) तस्य जन्म ..................मण्डले अभवत् । (सारण/पटना)

(ग) तस्य ................ संस्कृतौ महती श्रद्धा आसीत् । (पाश्चात्य/भारतीय)

(घ) सः ................ तमे खीष्टाब्दे प्रथमः राष्ट्रपतिः स्वीकृतः अभूत्। (1952/1950)

(ङ) तस्य सर्वेषु .................... सहानुभूतिरपि आसीत् । (धर्मेषु/अधर्मेषु)

4. अधोलिखितानां शुद्धकथनानां समक्षं (√) अशुद्धानां च समक्षं (×) इति चिह्नांकनं कुरुत -

(क) सः टी. के. घोष-अकादमीतः प्रवेशिकापरीक्षायां सम्मिलितः । ( )

(ख) तस्य मनः अधिवक्तृवृत्तौ संलग्नं नासीत् । ( )

(ग) सर्वं कार्यं विहाय देशसेवायां संलग्नः । ( )

(घ) स्वतन्त्रतान्दोलने सर्वदा अयम् अग्रणीः । ( )

(ङ) तस्य सर्वेषु धर्मेषु सहानुभूतिः नासीत् । ( )

5. संधिं कुरुत -

तत्+अनन्तरम्, बाल्यात्+एव, सदा+एव, इति+आदि, बाल+अवस्था ।

6. **रिक्तस्थानानि उचितपदेन पूरयत -**

(क) गत्वा = √गम् + .................. (ग) लिखितवान् = ............. + क्तवतु

(ख) ...................... = प्र + √आप् + क्तवतु

(घ) स्मरणीयः = √स्मृ + ........... (ङ) दत्तवन्तः = √दा + ...............

## योग्यता-विस्तारः

स्वतन्त्र भारत के नेताओं में डॉ॰ राजेन्द्र प्रसाद महात्मा गाँधी के सच्चे अनुयायी थे । अपनी प्रतिभा तथा मेधाविता के कारण छात्रावस्था में ही ये अत्यधिक प्रसिद्ध हो चुके थे। कलकत्ता उच्च न्यायालय तथा बाद में पटना उच्च न्यायालय में अधिवक्ता के रूप में इनकी प्रसिद्धि हो चुकी थी तथापि महात्मा गाँधी के चम्पारण सत्याग्रह के समय इन्होंने सब कुछ त्यागकर गाँधीजी का साथ दिया तथा वहाँ के किसानों को निलहे गोरों से मुक्ति दिलाई । शरीर से कुछ अस्वस्थ रहने पर भी (क्योंकि इन्हें सांस की बीमारी थी) इन्होंने समाजसेवा के लिए कभी अपने रोग की चिन्ता नहीं की । 1934 ई॰ में बिहार

में आए भीषण भूकम्प के समय इनकी संगठन-शक्ति तथा सेवा-भावना अत्यन्त श्लाघनीय थी । कांग्रेस दल में इन्होंने बहुत ऊँची प्रतिष्ठा पाई थी । दूसरे नेताओं को आगे बढ़ाने में अपनी क्षमता तथा योग्यता की प्राय: इन्होंने सर्वत्र उपेक्षा की । "सादा जीवन उच्च विचार" इनके जीवन-दर्शन का मुख्य सूत्र था । परिणामत: राष्ट्रपति भवन में रहते हुए इन्होंने भारतीय संस्कृति का स्वरूप प्रदर्शित किया और विदेशी संस्कृति को सर्वथा परिवर्तित कर दिया था । यदि आधुनिक नेताओं में कोई अनुकरणीय हैं तो पहला नाम डॉ॰ राजेन्द्र प्रसाद का ही होगा। भारतीय गणतन्त्र के प्रथम राष्ट्रपति के रूप में स्वीकार करके भारत ने इनका उचित सम्मान किया ।

* * *